शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

माध्यमिक स्तरीय बच्चों के व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं के प्रभाव

प्राप्तिः 15.08.2022
स्वीकृतः 16.09.2022

66

डॉ० कुँवर पाल सिंह
एस०ए०एफ० आई०सी०एच०आर
नई दिल्ली
ईमेलः *singhkawarpal720@gmail.com*

डॉ० प्रमिला रानी
प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग
इस्माईल गर्ल्स नेशनल इण्टर कॉलेज
शास्त्री नगर, मेरठ (उ०प्र०)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तरीय बच्चों के व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं के प्रभाव का आंकलन का प्रयास किया गया है। वर्तमान पीढ़ी ने अपनी माँ को बाहर काम करना स्वीकार किया हैं इस प्रकार माताओं का रोजगार बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित नहीं कर सकता है। इसके अलावा माताएं अपने बच्चों को जितना गुणवत्तापूर्ण समय देती हैं, वह दोनों ही मामलों में लगभग समान होता है क्योंकि घर पर रहने वाली माँ ज्यादातर समय घर के कामों में व्यस्त रहती हैं। शोधकर्ता ने कामकाजी माताओं के बच्चों के सामने आने वाली समस्याओं पर प्रकाश डाला और पाया कि माँ द्वारा प्रदान की जाने वाली देखभाल बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए बहुत जिम्मेदार हैं घर ही ऐसा होता है, जहां बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है। वर्ष 2008 में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई मातृत्व वृद्धि, चाइल्ड केयर लीव जैसी पहलों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। आगे यह भी सुझाव दिया गया है कि सरकार द्वारा ऐसे कुछ और कदम उठाए जाने चाहिए जिससे कामकाजी महिलाओं को अपने बच्चों की उचित देखभाल करने में सुविधा हो।

मुख्य बिन्दु

कामकाजी माताएं, गैर–कामकाजी माताएं, व्यक्तित्व शैक्षणिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर।

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' अर्थात् माता एवं मातृभूमि स्वर्ग के समान हैं। माता ईश्वर की अद्वितीय रचनाओं में अपना प्रथम स्थान रखती है यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है। धरती पर माता की उत्पत्ति सभी प्राणियों के लिए वरदान स्वरूप है, क्योंकि सभी का अस्तित्व माता से ही जुडा है। माता अपनी संतान को नौ माह तक अपने गर्भ में धारण कर सभी कर्तव्यों का पालन पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ करती है। माता अपने स्नेह रूपी धागे से मोती रूपी सदस्यों को एक माला के जैसे पिरोकर रखती है। परिवार की देखभाल, आवश्यकताओं का ध्यान रखना एवं पूर्ति करना, परिवार को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहना, पौष्टिक आहार, सुसंस्कार प्रदान करना इत्यादि माता का धर्म होता है एवं इनके धर्मपालन में किसी कमी का आँकलन करना कठिन कार्य है। माताएं अपने

बच्चों में अच्छे शीलगुण, संस्कार, आत्मविश्वास, व्यक्तित्व एवं संवेगों के विकास में अपना योगदान व मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।[1]

अपने बच्चों के व्यक्तित्व को आकार देने में माताओं का बहुत बड़ा योगदान होता हैं हाल के वर्षों में शिक्षा के प्रसार, पहचान की खोज और तकनीकी परिवर्तनों की शुरूआत के कारण, भारत में बड़ी संख्या में महिलाएं नौकरी के बाजार में प्रवेश कर रही हैं। स्वतंत्रता के बाद की अवधि में महिलाओं की शिक्षा में तेजी से विस्तार ने उनके रोजगार की संभावना में सुधार किया है। आज कोई ऐसा पेशा नहीं है जिसमें महिलाओं ने प्रवेष न किया हो। इसने माँ की पारंपरिक भूमिका में 'देखभाल करने वाले' के रूप में 'रोटी कमाने वाले' के रूप में आमूलचूल परिवर्तन किया है और बच्चे के पालन–पोषण के लक्ष्यों और प्रथाओं को बदल दिया है इसलिए, उनके किशोरी की उपलब्धि प्रेरणा पर इसके प्रभाव को देखने का प्रयास किया जाता है।[2]

महिलाएं कुछ प्राकृतिक क्षमताओं से संपन्न होती हैं जो केवल महिलाओं के पास होती हैं। सेवा की भावना उनमें एक महत्वपूर्ण विशेषता है। महिलाएं परिवार और समाज में कई तरह से योगदान करती हैं। एक माँ के रूप में, वह अपने बच्चों की सेवा करती है; एक पत्नी के रूप में, वह अपने पति की सेवा करती है; बहू के रूप में, वह परिवार के बड़ों की सेवा करती है; और एक परिचारिका के रूप में वह समाज के दुःखी विकलांग और बीमार लोगों की सेवा करती है। एक महिला के रूप में माँ की भूमिका के महत्व को कम करके नहीं आँका जा सकता। वर्तमान में महिलाएं दो भूमिकाएं निभा रही हैं। वह पहले एक माँ के रूप में बच्चों की देखभाल करती है, और फिर वह वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के लिए पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है। एक ओर, हम कह सकते हैं कि बच्चे पूरी तरह से अपनी माताओं पर निर्भर है लेकिन आधुनिक युग में कामकाजी समूहों में महिलाओं का बहुमत है। देश की गरीबी और आर्थिक विकास की संभावनाओं की जांच करने पर पता चलता है कि इस क्षेत्र में महिलाओं का योगदान बढ़ा है।[3]

विगत वर्षों से यह देखने में आ रहा है कि महिलाओं में शिक्षा के अधिक प्रसार के साथ–साथ उनमें विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने तथा लगभग सभी प्रकार की नौकरियों में आने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ती जा रही है। महिलाओं के कार्यरत रहने पास समय का अभाव हो गया है परिणामस्वरूप वे अपने बच्चों की पढ़ाई पर पर्याप्त समय व ध्यान नहीं दे पाती हैं लेकिन वे अपने बच्चों को अधिक–से–अधिक सुविधा मुहैया कराने का हर संभव प्रयास करती हैं इसके लिए वे अपने बच्चों को अच्छे–से–अच्छे ट्यूान/कोचिंग के साथ ही उन्हें पढ़ने के लिए संपूर्ण सुविधा प्रदान करती है जिसका सकारात्मक प्रभाव उनके व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है। अच्छी ट्यूशन व्यवस्था एवं पढ़ाई के लिए संपूर्ण सुविधा प्रदान करने के लिए वे अधिक से अधिक पैसा खर्च करती हैं। स्पष्ट है कि बच्चों को सुविधा एवं अच्छा पढ़ाई का माहौल मिलेगा तो उसका व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि स्वतः ही बेहतर होगी जबकि गैर–कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान तो देती हैं लेकिन वे कामकाजी महिलाओं की तरह अपने बच्चों को पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पाती हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति कामकाजी महिलाओं की तरह अपने बच्चों को पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पाती हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा न्यून होती है। दूसरी ओर कामकाजी महिलाएं चूंकि खुद पढ़ी–लिखी होती है, इसलिए उन्हें अनुभव भी अधिक होता है। जिसका लाभ उनके बच्चों को मिलता है। जबकि गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों को यह सुविधा नहीं मिल पाती।[4]

बालक के विकास में माँ के प्यार के महत्व को कम करके नहीं आँका जा सकता है। वह बचपन से ही अपनी माँ के साथ सुरक्षित महसूस करता है। माँ के साथ रहने से बच्चों को उनकी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करने की अनुमति मिलती है जबकि माँ को उनके विकास के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्रदान करने की भी अनुमति मिलती है। ऐसा होने के लिए, बच्चों के पास सर्वोत्तम शैक्षिक अवसरों के साथ–साथ एक बेहतर पारिवारिक और शैक्षिक वातावरण होना चाहिए तभी बच्चों के व्यक्तित्व और बौद्धिक विकास में सुधार होगा। एक माँ विशेष रूप से न केवल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उसके पास अद्धितीय क्षमताएं हैं, बलिक इसलिए भी कि वह किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताती है और उसका प्रशिक्षण बच्चों के दृष्टिकोण, क्षमताओं और व्यवहार पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है। अधिकांश सफल और अच्छी तरह से समायोजित बच्चे ऐसे घरों से आते हैं जहां माता–पिता का दृष्टिकोण सकारात्मक होता है और बच्चे और माता–पिता के बीच एक मजबूत रिश्ता होता है।[5]

कामकाजी माता को किसी भी महिला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो घर से बाहर काम नहीं करती है। कामकाजी माताएं और गृहिणियां अपनी अलग–अलग गतिशीलता के कारण अपने बच्चों को अलग–अलग तरीकों से प्रभावित करती हैं। उपलब्धि प्रेरणा को एक विस्तारित व्यक्ति के रूप में माना गया है– आंतरिक प्रेरणा जो कुछ आंतरिक उत्कृष्टता मानकों को प्राप्त करने के प्रयास से जुड़े कार्यों, योजना और भावनाओं का एक पैटर्न दिखाती है। उपलब्धि की आवश्यकता को व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले व्यक्ति के व्यवहार के रूप में माना गया है। इसे एक सीखी हुई प्रेरणा भी माना जाता है। उपलब्धि प्रेरणा स्वयं उपलब्धियों के बजाय प्राप्त करने का दृष्टिकोण है। इसे विस्तारित व्यक्ति–आंतरिक प्रेरणा माना जा सकता है क्योंकि इसके सुदृढ़ीकरण में देरी हो रही है। यह व्यक्ति के भीतर परस्पर क्रिया से उत्पन्न होता है। उपलब्धि प्रेरणा ''कार्यों और भावनाओं की योजना बनाने का एक पैटर्न है जो उत्कृष्टता के कुछ आंतरिक मानकों को प्राप्त करने के प्रयास से जुड़ा है, उदाहरण के लिए, इच्छा शक्ति या मित्रता के विपरीत'' चूंकि शैक्षणिक उपलब्धि केवल संज्ञानात्मक चर का कार्य नहीं है, पर जोरदार तनाव मनोवैज्ञानिक चर का योगदान अनिवार्य है। जैसे कि मनोवैज्ञानिक चर का यह प्रमुख महत्व है, उनके द्वारा मानदंड के प्रति अनुपात भिन्नता का कितना प्रतिशत कारण है, विस्तार और परिमाणीकरण की आवश्यकता है।[6]

कामकाजी माताएं अपने बच्चों के अच्छे व्यक्तितव एवं शैक्षणिक विकास के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं। वे इसके लिए अधिक पैसा खर्च कर बच्चों को वे सभी सुविधाएं प्रदान करती हैं जिससे उसके बच्चों का व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक विकास गैर–कामकाजी माताओं के बच्चों की अपेक्षा बेहतर हो। ताकि उन्हें अपने बच्चों के भविष्य में कोई खतरा नहीं दिखाई पड़े, जबकि गैर–कामकाजी माताएं अपने बच्चों को अधिक से अधिक समय तो देती हैं लेकिन वह सुविधा नहीं दे पाती थी जो कामकाजी माताएं अपने बच्चों को देती हैं। गैर–कामकाजी महिलाओं के पास शैक्षिक व व्यावसायिक अनुभव कम होता है। बाहरी दुनिया से उनका जुडाव कम होता है। अतः समय के साथ हो रहे परिवर्तन से उनका जुड़ाव नहीं होता। साथ ही इनके पास भी घरेलू काम रहते हैं और वह अपने बच्चों की स्वाभाविक प्रतिभा को परख नहीं, वैसी शैक्षिक दृष्टि भी नहीं होती। परिणामस्वरूप गैर–कामकाजी माताओं की अपेक्षा कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यक्तित्व विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि सुदृढ़ एवं बेहतर होती हैं।[7]

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

लिन क्रैज (2006)[8] के अनुसार जो माताएं उच्च शिक्षित और कामकाजी हैं वे अपने बच्चों के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। हंगल एस0 और अमीनाभवी, वी0ए0 (2007) ने पाया है कि गृहणियों के किशोर बच्चों में आत्म बच्चों में आत्म–अवधारणा काफी होती है। गृहिणियों के बच्चों में नियोजित माताओं के बच्चों की तुलना में उचच आत्म–अवधारणा और उच्च उपलब्धि प्रेरणा होती है। गृहणियाों की बालिकाओं की भावनात्मक परिपक्वता गृहणियों के पुत्रों की अपेक्षा अधिक होती है। गृहिणियों के बच्चों की तुलना में नियोजित माताओं के बच्चे सामाजिक रूप से अधिक कुसमायोजित होते हैं और उनमें स्वतंत्रता का बहुत उच्च स्तर तक अभाव होता है।

हॉक, मैकब्राइड और गनेज़्दा (2004)[9], ने खुलासा किया है कि मातृ अलगाव की चिंता और बच्चों की चिंताओं और उनकी माताओं से अलगाव के बीच एक सकारात्मक संबंध मौजूद है। इसे बच्चे की भलाई और उसके अपने मनोवैज्ञानिक संतुलन के लिए खतरा माना जाता है। इस तरह की चिंता, उदासी या अपराध–बोध की भावनाओं में परिलक्षित हो सकती है, चूंकि कामकाजी माताएं घर के बाहर काफी समय बिताती हैं, इसलिए वे अपने बच्चों को ऐसा गुणवत्तापूर्ण समय देने की कोशिश करती हैं, जिसमें वे उनका पालन–पोषण कर सकें। यह विशेष रूप से बच्चों का समय है। हालांकि गृहणियों के लिए चीजें थोड़ी अलग हैं। वे अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताती हैं लेकिन जरूरी नहीं कि वह समय गुणवत्तापूर्ण हो क्योंकि उन्हें एक साथ बच्चों की देखभाल और घर के काम करने होते हैं।

अनुसंधान अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

बालक के विकास में माता के स्नेह का महत्वपूर्ण स्थान है। जन्म से ही माँ के भविष्य में उसे एक सुरक्षा का बोध होता है। माँ के साथ रहकर बच्चे जहां शारीरिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति करने में समर्थ रहते हैं, वहां साथ ही साथ माँ का उचित निर्देशन व प्रशिक्षण उनके विकास को सही दिशा प्रदान करता है। इसके लिए आवश्यक है कि माताएं अधिक से अधिक समय बच्चों के सम्पर्क में व्यतीत करें। जो स्त्रियाँ नौकरी करने लगती हैं, उसका दिन का अधिकांश समय घर के बाहर स्कूलों, दफ्तरों आदि में बीतता है लेकिन ऐसी माताओं का मानना है कि बच्चे को अकेले छोड़ने से बहुत कुछ काम वह स्वयं करना सीखता है, और आत्मनिर्भर होता है। नौकरी करने वाली महिला जबरदस्त द्वंद से गुजरती है, घर और बाहर दुगुना काम करती है। ऐसी स्थिति में कामकाजी महिला का अपने किशोर बच्चों के साथ कैसा सम्बन्ध है वह किशोर बच्चों की तरफ ध्यान दे पाती है।

वर्तमान परिदृश्य में कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों को बेहतर से बेहतर सुविधाएं एवं वातावरण मुहैया कराने के लिए रोजगार का सहारा लेती है जिस कारण वह अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाती जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उसके व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है जबकि गैर–कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों को पर्याप्त समय देती हैं। साथ ही उसके अध्ययन–अध्यापन में मदद करती हैं लेकिन आर्थिक कमजोरी के कारण वे अपने बच्चों को वह सुविधा उपलब्ध नहीं करा पाती है जो कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों को देती है। इसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कैसा पड़ता है यह एक खोज का विषय है इस नई खोज की गति व उद्देश्य दोनों इस विषय के गहन अध्ययन के लिए बाध्य करते हैं। परिणामस्वरूप कामकाजी महिलाओं के बच्चों का व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि गैर–कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा बेहतर होता है। आजकल की सभी

महिलाएं नौकरी करना पसंद करती हैं। अतः उनके बच्चों के व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं के बच्चों के शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं बच्चों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत शोधकर्ता ने ''माध्यमिक स्तरीय बच्चों के व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं का प्रभाव'' किया है।

अनुसंधान प्ररचना

किसी भी शोध कार्य का महत्वपूर्ण अंग शोध विधि होता है। जब कभी वर्तमान संदर्भ में शिक्षा के विकास को देखने का प्रयास किया जाता है तथा वर्तमान स्थिति से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करें भविष्य में सुधार हेतु सुझाव दिया जाता है, प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत विवरणात्मक अनुसंधान प्ररचना से हुआ है जिसमें सर्वेक्षण विधि के माध्यम से प्रश्नावली, साक्षात्कार भरकर तथ्यों का संकलन किया गया है।

अनुसंधान उपकरण

प्रस्तुत शोध के सर्वेक्षण स्वरूप के कारण शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के उद्देश्यानुरूप शोध सम्बन्धी अपकरणों का चुनाव किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत उपकरण के रूप में कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं के व्यक्तित्व मापन हेतु डॉ0 महेश भार्गव द्वारा विकसित 6 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली 'डी0पी0आई0 परीक्षण' के हिंदी संस्करण का उपयोग कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यक्तित्व लक्षणों को निर्धारित करने के लिए किया गया है एवं कामकाजी एवं गैर–कामकाजी माताओं के बच्चों की शैक्षिक प्रगति हेतु डॉ0 (श्रीमती) ए0 सेन गुप्ता द्वारा निर्मित ''सामान्य कक्षा–कक्ष उपलब्धि परीक्षण'' का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत शोधकर्ता ने समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु स्तरीय दैव निदर्शन के पद्धति के आधार पर चयनित प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से उत्तरदाताओं के रूप में 20–20 छात्र एवं छात्राओं अर्थात् दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले कुल 200 छात्रों का चयन किया गया है। जिसमें अध्ययनकर्ता सम्पूर्ण जनसंख्या में से अपने उद्देश्य के अनुसार अध्ययन इकाईयों का चयन करता है।

निष्कर्ष

कामकाजी माताओं के बच्चों के व्यक्तित्व की तुलना में गैर–कामकाजी माताओं के बचचों के व्यक्तित्व में भिन्नताएं देखने को मिली है। कामकाजी माताएं अपने बच्चों को गैर–कामकाजी

माताओं की तुलना में पर्याप्त समय नहीं दे पाती है जिसके अभाव सें बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है परन्तु गैर–कामकाजी माताएँ अपने बच्चों को पर्याप्त समय देने के कारण उनके व्यावहारिक जीवन को संतुलन में बनाए रखने में पूर्ण सहयोग देती है।

संदर्भ

1. Singh, A., Kiran, U.V. (2014). Impact of Mother's Working Status on Personality of Adolescents. *International Journal of Advanced Scientific and Technical Research*. 1(4). Pg. **86-99.**
2. Khan, M.A., Hassan. A. (2012). "Emotional Intelligence of Children of Working and Non-working Mothers". Vol.-4. Issue-4. Pg. **24-31.**
3. Kiran, U.V. (2012). A Comparative Study of Personality among School Going and Non-school going Adolescents. *Asain Journal of Home Science*. 7(2). Pg. **564-566.**
4. Aeri, P., Jain, d. (2010). Effect of Employment Status of Mothers on Conceptual Skills of Preschoolers. *Journal of Social Science*. 24(3). Pg. **213-215.**
5. Aeri, P., Jain, d. (2010). Effect of Employment Status of Mothers on Conceptual Skills of Preschoolers. *Journal of Social Science*. 24(3). Pg. **213-215.**
6. Dhall, C.T., Saini. (2008). Academic Performance of Elementary School Children of Working Mothers. *Edutracks.* 7(5). Pg. **43.**
7. Lyn, Crage. (2006). "Parental Education, Time in Paid Work and Time with Children" *British Journal of Sociology.* 57(4). London School of Economics and Political Science. Pg. **200.**
8. Hangal, S., Aminabhavi, V.A. (2007). Self-concept, Emotional Maturity and Achievement Motivation of the Adolescent Children of Employmed Mothers and Homemakers. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology*. 33(1). Pg. **103-110.**
9. Hock, E., McBride, S., Gnezda, M. (2004). Maternal Separation Anxiety: Mother-mother Infant Separation from the maternal Perspective. Child Development. 60. Pg. **200.**